फोसणाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएहि[1] सत्थाणेहि केवडिखेत्तं फोसिदं ? ॥ १ ॥

एत्थ णिरयगदीए त्ति चेवकारो अज्झाहारेयव्वो। तेण किं लद्धं ? णिरयगदीए चेव णेरइया, ण अण्णत्थ कत्थ वि त्ति पडिसेहो उवलद्धो। तेहि णेरइएहि सत्थाणत्थेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं – किं सव्वलोगो, किं लोगस्स असंखेज्जा भागा, किं लोगस्स संखेज्जदिभागो, किमसंखेज्जदिभागो त्ति एदमाइरियासंकिदं। चे[2] सद्देण विणा कधमासंकावगम्मदे ? ण, अवुत्तस्स वि पयरणवसेण कत्थ वि अवगमुवलंभादो। सेसं सुगमं। एत्थ ओघाणुगमो किण्ण परूविदो ? ण, चोद्दसमग्गण[3]विसिट्ठजीवाणं फोसणावगमेण

स्पर्शनानुगमसे गतिमार्गणानुसार नरकगतिमें नारकी जीव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ १ ॥

यहां सूत्रमें 'नरकगतिमें ही' ऐसा एवकारका अध्याहार करना चाहिये।

शंका– एवकारका अध्याहार करनेसे क्या लाभ है ?

समाधान– नरकगतिमें ही नारकी जीव हैं, अन्यत्र कहींपर नहीं हैं, इस प्रकार एवकारसे उनका अन्यत्र प्रतिषेध उपलब्ध होता है। उन नारकियोंके द्वारा स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है – क्या सर्व लोक स्पृष्ट है, क्या लोकका असंख्यात बहुभाग स्पृष्ट है, क्या लोकका सख्यातवां भाग स्पृष्ट है, कि वा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ? यह आचार्य द्वारा आशंका की गई है।

शंका - जे चे ('चेव') शब्दके विना कैसे आशंकाका परिज्ञान होता है।

समाधान - अनुक्तका भी प्रकरणवश कहींपर अवगम पाया जाता है : शेष सूत्रार्थ सुगम है।

शंका– यहां ओघानुगमका प्ररूपण क्यों नहीं किया ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, चौदह मार्गणाओंसे विशिष्ट जीवोंके स्पर्शनका ज्ञान

---

१. अ. ब. क. प्रतिषु 'णेरइया' इति पाठः। २. ब. मु. प्रतौ वासद्देण इति पाठः।
३. मु. प्रतौ मग्गणा इति पाठः।

तस्स वि अवगमादो ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २ ॥

होदु णाम वट्टमाणकाले णेरइएहि सत्थाणेहि छुत्तं खेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणं। किंतु णादीदकाले एवं होदि, तत्थ तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागमेत्तछुत्तखेत्तुवलंभादो । तं कधं ? णेरइया लोगणालिं समचउरसरज्जुमेत्तायामविक्खंभ-छरज्जुआयदं सव्वमदीदकाले सट्ठाणट्ठिया फुसंति त्ति ? ण, संखेज्जजोयणबाहल्लसत्तपुढवीओ मोत्तूण तेसिमदीदकाले अण्णत्थ अवट्ठाणाभावादो । जदि वि एवं तो वि तीदकाले तिरियलोगादो संखेज्जगुणेण होदव्वं, संखेज्जसूचिअंगुलबाहल्लतिरियपदरमेत्तखेत्तुवलंभादो ? ण, पुढवीणमसंखेज्जदिभागे चेव णेरइया होंति त्ति गुरूवदेसादो, सत्थाणेहि तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो चेव फोसिदो त्ति वक्खाणादो वा।

होनेसे उसका भी ज्ञान हो जाता है ।

नारकियों द्वारा स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २ ॥

शंका– वर्तमान कालमें नारकियोंसे स्पृष्ट क्षेत्र चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण व माणुसक्षेत्रसे असंख्यातगुणा भले ही हो, किन्तु यह अतीतकालमें नहीं बनता, क्योंकि, अतीतकालमें तीन लोकोंके संख्यातवें भागमात्र स्पृष्ट क्षेत्र पाया जाता है ?

प्रतिशंका– वह कैसे ?

प्रतिशंकाका समाधान– नारकी जीव स्वस्थानमें स्थित होते हुए अतीतकालमें समचतुष्कोण एक राजुप्रमाण आयाम व विष्कम्भसे युक्त तथा छह राजु ऊंची सब लोकनालीको छूते हैं ।

शंकाका समाधान–नहीं, क्योंकि, संख्यात योजन बाहल्यरूप सात पृथिवियोंको छोड़कर उन नारकियोंका अतीतकालमें अन्यत्र अवस्थान नहीं है ।

शंका– यद्यपि ऐसा है तो भी अतीतकालमें तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र होना चाहिये, क्योंकि, संख्यात सूच्यंगुल बाहल्यरूप व तिर्यक् प्रतरमात्र क्षेत्र पाया जाता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, पृथिवियोंके असंख्यातवें भागमें ही नारकी जीव होते हैं, ऐसा गुरूपदेश है; अथवा स्वस्थानोंकी अपेक्षा तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भाग ही स्पृष्ट है, ऐसा व्याख्यान पाया जाता है ।

समुग्घादेण उववादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ३ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४ ॥

एदं सुत्तं वट्टमाणकालमस्सिदूण उवइट्टं । ण च एत्थ पुणरुत्तदोसो, मंदबुद्धीणं[1] पुणरुत्तपुव्वुत्तत्थसंभालणेण फलोवलंभादो । अहवा वेयण-कसाय-वेउव्वियपदाणमतीदकालफोसणं पडुच्च एदं वुत्तं । तत्थ चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागस्स माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणस्स फोसिदखेत्तस्सुवलंभादो ।

छच्चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ५ ॥

एदं मारणंतिय-उववादपदाणमदीदकालमस्सिदूण वुत्तं । मारणंतियस्स छच्चोद्दसभागा संखेज्जजोयणसहस्सेण ऊणा । अधवा एत्थ ऊणपमाणमेत्तियमिदि ण णव्वदे, फासेसु मज्झेसु वा एत्तियं[2] खेत्तमूणमिदि विसिट्ठुवएसाभावादो । उववादपदे वि

नारकियोंके द्वारा समुद्घात व उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ ३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

नारकियों द्वारा उक्त पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ ४ ॥

यह सूत्र वर्तमान कालका आश्रय कर उपदिष्ट है । यहां पुनरुक्त दोष नहीं है, क्योंकि, मन्दबुद्धि जीवोंको पुन कहे गये पूर्वोक्त अर्थका स्मरण करानेसे फलकी उपलब्धि है । अथवा, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंके अतीत कालसम्बन्धी स्पर्शनकी अपेक्षा कर यह सूत्र कहा गया है, क्योंकि, उनमें चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा स्पृष्ट क्षेत्र पाया जाता है ।

अथवा, उक्त नारकियोंके द्वारा कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र स्पृष्ट है ॥ ५ ॥

यह सूत्र मारणान्तिक और उपपाद पदोंके अतीत कालका आश्रय कर कहा गया है । मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा संख्यात योजनसहस्रसे हीन छह बटे चौदह भाग–प्रमाण क्षेत्र स्पृष्ट है । (देखो पुस्तक, ४, पृ. १७४ आदि) । अथवा यहां कमका प्रमाण इतना है, यह नहीं जाना जाता, अथवा, स्पर्शनके मध्यमें इतना क्षेत्र कम है, इस प्रकार विशिष्ट उपदेशका अभाव है । उपपाद पदमें भी कमका प्रमाण पूर्वके

---

१. ब स प्रत्योः मंदबुद्धि.च इति पाठः । २. मु. प्रती मज्झेसु एत्तियं इति पाठः

ऊणपमाणं पुव्वं व आणिदूण वत्तव्वं । कधं छचोद्दसभागा मारणं जुज्जदे ? ण, तिरिक्ख-णेरइयाणं सव्वदिसाहिंतो आगमण-गमणसंभवादो ।

पढमाए पुढवीए णेरइया सत्थाण-समुग्घाद-उववादपदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ६ ॥

एत्थ चेवकारो ण[1] अज्झाहारेयव्वो, अवहारणाभावादो । जे पढमाए पुढवीए णेरइया तेहि सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदमिदि एत्थो संबंधो कायव्वो । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूइदत्थो वुच्चदे । तं जहा – सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपदेहि वट्टमाणकालमस्सिदूण परू

समान जानकर कहना चाहिये ।

शंका – मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा छह बटे चौदह भागप्रमाण स्पर्शन कैसे योग्य है?

समाधान – नहीं, क्योंकि, तिर्यंच व नारकी जीवोंका सब दिशाओंसे आगमन और गमन सम्भव है ।

प्रथम पृथिवीमें नारकी जीवोंके द्वारा स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ ६ ॥

यहां एवकारका अध्याहार नहीं करना चाहिये, क्योंकि, अवधारण अर्थात् निश्चयका अभाव है । जो प्रथम पृथिवीमें नारकी जीव है उनके द्वारा स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद पदोंसे कितना स्पृष्ट है, इस प्रकार यहां सम्बन्ध करना चाहिये । शेष सूत्रार्थ सुगम है

प्रथम पृथिवीके नारकियों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ ७ ॥

इस देशामर्शक सूत्रके द्वारा सूचित अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है -- स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात तथा उपपाद पदोंकी अपेक्षा वर्तमान कालका आश्रय कर स्पर्शनकी प्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । स्वस्थानस्वस्थान, विहार

[1] अ क. प्रत्यो चेवकाएण इति पाठः ।

वणाए खेत्तभंगो। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि परिणद[1] णेरइएहि तीदे काले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कुदो ? असंखेज्जजोयणविक्खंभणिरयावासखेत्तफलं ठविय णेरइयाणमुस्सेहेण गुणिय लद्धं तप्पाओग्गसंखेज्जबिलसलागाहि गुणिदे तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखेत्तुवलंभादो । अदीदकाले मारणंतिय-उववादपरिणदेहि पढमपुढविणेरइयेहि तिण्णं[2] लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं ? वुच्चदे असीदि[3] सहस्साहियजोयणलक्खपढमपुढविबाहल्लम्मि हेट्ठिमजोयणसहस्सं णेरइएहि सव्वकालं ण छुप्पदि त्ति काऊण एत्थ जोयणसहस्समवणिय सेसजोयणसहस्सबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय उस्सेहेण एगूणवंचासमेत्तखंडाणि काऊण पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । कुदो? एक्करज्जुरुंदो सत्तरज्जुआयदो जोयणलक्खबाहल्लो तिरियलोगो त्ति गुरूवएसादो । जे पुण जोयणलक्खबाहल्लं रज्जुविक्खंभं झल्लरीसमाणं तिरियलोगं भणंति तेसिं

वत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंसे परिणत नारकियोंके द्वारा अतीत कालमें चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, असंख्यात योजन विष्कम्भरूप नारकावासके क्षेत्रफलको स्थापित कर व उसे नारकियोंके उत्सेधसे गुणित कर प्राप्त राशिको तत्प्रायोग्य संख्यात बिलशलाकाओंसे गुणित करनेपर तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भागमात्र क्षेत्र उपलब्ध होता है । अतीत कालकी अपेक्षा मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदको प्राप्त प्रथम पृथिवीके नारकियों द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है ।

शंका– तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्शन क्षेत्र कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान – कहते हैं एक लाख अस्सी सहस्र योजनप्रमाण प्रथम पृथिवीके बाहल्यमें अधस्तन एक सहस्र योजन क्षेत्र सर्व काल नारकियोंसे नहीं छुआ जाता, ऐसा समझकर इसमेंसे एक सहस्र योजनोंको कम कर, शेष (एक लाख उन्यासी) सहस्र योजन, बाहल्यरूप राजुप्रतरको स्थापित कर, उत्सेधसे उनंचास मात्र खण्ड करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है, क्योंकि, 'एक राजु विस्तृत, सात राजु आयत, और एक लाख योजन बाहल्यवाला तिर्यग्लोक है' ऐसा गुरुका उपदेश है । किन्तु जो आचार्य एक लाख योजन बाहल्यसे युक्त व एक राजु विस्तृत झालरके समान तिर्य–

---

१. मु प्रतौ पदपरिणदेहि इति पाठः । २. अ. स प्रत्यो तिण्णि इति पाठः । ३. मु. प्रतौ मागत्तं असीदि इति पाठः ।

मारणंतिय-उववादखेत्ताणि तिरियलोगादो सादिरेयाणि होंति । ण चेदं घडदे, एदम्हि उवदेसे घेप्पमाणे लोगम्मि तिण्णिसदतेदाल[1]मेत्तघणरज्जूणमणुप्पत्तीदो । ण च एदाओ घणरज्जूओ[2] असिद्धाओ, रज्जू सत्तगुणिदा जगसेडी, सा वग्गिदा जगपदरं, सेडीए[3] गुणिदजगपदरं घणलोगो होदि त्ति सयलाइरियसम्मदपरियम्मासिद्धत्तादो । ण च सव्वदो हेट्ठिम-मज्झिम-उवरिमभागेहि वेत्तासण-झल्लरी-मुइंगसमाणे लोगे घेप्पमाणे सेढी-पदर-घणलोगा वग्गसमुट्ठिदा होंति, तधा संभवाभावादो । ण च एदेसिमवग्गसमुट्ठिदत्तमभुवगंतुं जुत्तं, कदजुम्मेहि पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्त-जोणिणि-जोदिसिय-वेंतरदेवअवहारकालेहि सुत्तसिद्धेहि अकदजुम्मजगपदरे भागे हिदे सच्छेदस्स जीवरासिस्स आगमणप्पसंगादो । ण च एवं, जीवाणं छेदाभावादो, दव्वाणिओगद्दारवक्खाणम्मि वुत्तहेट्ठिम-उवरिमवियप्पाणमभावप्पसंगादो च । तिण्णिसदतेदालघणरज्जुपमाणो उवमालोओ, एदम्हादो अण्णो पंचदव्वाहारो लोगो त्ति के वि आइरिया भणंति । तं पि ण घडदे, उवमेएण विणा उवमाए अण्णत्थ घणंगुल-पलिदोवम-सागरोवमादिसु अणुवलंभादो । तम्हा[4]– एत्थ वि उवमेएण लोगेण पमाणदो उवमालोगाणुसारिणा पंचदव्वाहारेण

लोकको बतलाते हैं उनके मतानुसार मारणान्तिक व उपपाद क्षेत्र तिर्यग्लोकसे साधिक होते हैं । (देखो पुस्तक ४, पृ. १८३ और १८६ के विशेषार्थ) । परन्तु यह घटित नहीं होता, क्योंकि, इस उपदेशके ग्रहण करनेपर लोकमें तीनसौ तेतालीस प्रमाण और घनराजुओंकी उत्पत्ति नहीं बनती तथा ये घनराजु असिद्ध नहीं हैं, क्योंकि, 'राजुको सातसे गुणित करनेपर जगश्रेणी, उस जगश्रेणीका वर्ग जगप्रतर और जगश्रेणीसे गुणित जगप्रतरप्रमाण घनलोक होता है' इस प्रकार समस्त आचार्यों द्वारा माने गये परिकर्मसूत्रसे वे सिद्ध हैं । दूसरी बात यह है कि सब ओरसे अधस्तन, मध्यम व उपरिम भागोंसे क्रमशः वेत्रासन, झालर व मृदंगके समान लोकके ग्रहण करनेपर जगश्रेणी, जगप्रतर और घनलोक वर्गसे उत्पन्न नहीं होते; क्योंकि, उक्त मान्यतामें वैसा संभव नहीं है । और इनकी विना वर्गके उत्पत्ति स्वीकार करना उचित नहीं है, क्योंकि पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त योनिमीती तिर्यंच, ज्योतिषी और वानव्यन्तर देवोंके सूत्र-सिद्ध कृतयुग्मराशिरूप अवहारकालोंका अकृतयुग्म जगप्रतरमें भाग देनेपर सछेद जीवराशिकी प्राप्तिका प्रसंग प्राप्त होता । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि जीवोंका छेदराशिरूप होनेका अभाव है । तथा द्रव्यानुयोगद्वारके व्याख्यानमें कहे गये अधस्तन व उपरिम विकल्पोंके अभावका भी प्रसंग आता है । (देखो पुस्तक ३, पृ. २१९, २४९ व पुस्तक ७, पृ. २५३) ।

तीनसौ तेतालीस घनराजुप्रमाण उपमालोक है, इससे पांच द्रव्योंका आधारभूत लोक अन्य है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । परन्तु वह भी घटित नहीं होता, क्योंकि उपमेयके

1. अ. क. अ. प्रतिषु तिण्णिसेराळ इति पाठः ।   2. मु. प्रतौ घणरज्जू इति पाठः ।
3. अ. आ. प्रत्योः सेडी इति पाठः ।   4. अ. प्रतौ तं म्हा इति पाठः ।

अण्णेण होदव्वमण्णहा एदस्स उवमालोगत्तोणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

बिदियाए जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९ ॥

एदस्सत्थो- सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणपदपरिणदेहि अदीद-वट्टमाणकालेसु णेरइएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कुदो? छण्णं पुढवीणं लोगणालीए रुद्धखेत्तस्स असंखेज्जदिभागे चेव णेरइयावासाणमुवलंभादो।

समुग्घाद-उववादेहि य केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १० ॥

सुगमं ।

विना उपमाकी अन्यत्र घनांगुल, पल्योपम व सागरोपमादिकोंमें उपलब्धि नही होती । अत एव यहां भी प्रमाणसे उपमालोकका अनुसरण करनेवाला व पांच द्रव्योंका आधारभूत उपमेय लोक अन्य होना चाहिये, क्योंकि, इसके विना इसके उयमालोकत्व बन नही सकता (देखो पुस्तक ४, पृ. १०-२२) । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

द्वितीयसे लेकर सप्तम पृथिवी तकके नारकियों द्वारा स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट हैं ? ॥ ८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त नारकियों द्वारा स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ ९ ॥

इस सूत्रका अर्थ - स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थान पदोंसे परिणत नारकियोंके द्वारा अतीत व वर्तमान कालोंमें चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है. क्योंकि, छह पृथिवियोंके लोकनालीसे रुद्ध असंख्यातवें भागमें ही नारकावास पाये जाते हैं ।

उक्त नारकियों द्वारा समुद्घात व उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ १० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो एग-बे-तिण्णि-चत्तारि-पंच-छ-चोद्दस-भागा वा देसूणा ।। ११ ।।

वेयण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदेहि तीदे काले लोगस्स असंखेज्जदिभागो फोसिदो । वट्टमाणकाले पुण छपुढविणेरइएहि वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तीदे काले मारणंतिय-उववादेहि बिदियादिछपुढविणेरइएहि जहाकमेण देसूणएग-बे-तिण्णि-चत्तारिपंचछचोद्दसभागा । कुदो ? तिरिक्खाणं णेरइयाणं तीदे काले सव्वदिसाहि आगमणगमणसंभवादो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। १२ ।।

सुगममेदं ।

सव्वलोगो ।। १३ ।।

उक्त नारकियों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम चौदह भागोंमेंसे क्रमशः एक, दो, तीन, चार, पांच और छह भाग स्पृष्ट हैं ।। ११ ।।

वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंसे परिणत उक्त नारकियों द्वारा अतीत कालकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है । किन्तु वर्तमान कालकी अपेक्षा छह पृथिवियोंके नारकियों द्वारा वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदोंसे परिणत होकर चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । अतीत कालकी अपेक्षा मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे द्वितीयादि छह पृथिवियोंके नारकियों द्वारा यथाक्रमसे कुछ कम चौदह भागोंमेंसे एक, दो, तीन, चार, पांच और छह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, तिर्यंच व नारकियोंका अतीत कालमें सब दिशाओंसे आगमन और गमन सम्भव है ।

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच जीव स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। १२ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

तिर्यंच जीव उक्त पदोंसे सर्व लोक स्पर्श करते हैं ।। १३ ।।

एदस्सो अत्थो वुच्चदे। तं जहा– एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो। सत्थाण-सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि तीदे काले सव्वलोगो फोसिदो। कुदो? वट्टमाणे व सव्वलोगे अवट्ठाणुवलंभादो। विहारेण तीद काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-भागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। असंखेज्जेसु समुद्देसु तसजीवविरहिएसु संतेसु कधं विहरंताणं तिरिक्खाणं तत्थ संभवो? ण, तत्थ पुव्ववइरियदेवाणं पओएण विहारे विरोहाभावादो। तीदे काले विहरंततिरिक्खेहि पुट्ठ-खेत्ताणयणविहाण वुच्चदे। तं जहा– लक्खजोयणबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय उड्ढमेगूण-वंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं खेत्तं होदि। जदि वि जोयणलक्खबाहल्लेण विणा संखेज्जजोयणबाहल्लं तिरियपदरं लब्भदि, तो वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो चेव होदि। वेउव्वियसमुग्घादगदाणं वट्टमाणे खेत्तं, तीदे काले तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोहि लोगेहितो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कुदो? वाउकाइयजीवाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं विउव्वणखमाणं पंच-

---

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है– वर्तमानकालप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदोंसे अतीत कालमें तिर्यंच जीवों द्वारा सर्व लोक स्पृष्ट है क्योंकि, वर्तमान कालके समान अतीत कालमें भी तिर्यंच जीवोंका सर्व लोकमें अवस्थान पाया जाता है। विहारकी अपेक्षा अतीत कालमें तीन लोकोंका असंख्यातवांभाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है।

शंका– असंख्यात समुद्रोंके त्रस जीवोंसे रहित होनेपर वहां विहार करनेवाले त्रस जीवोंकी सम्भावना कैसे हो सकती है?

समाधान – नहीं क्योंकि, वहां पूर्व वैरी देवोंके प्रयोगसे विहार होनेमें कोई विरोध नहीं है।

अतीत कालमें विहार करनेवाले तिर्यंचोंसे स्पृष्ट क्षेत्रके निकालनेका विधान कहते हैं। वह इस प्रकार है – एक लाख योजन बाहल्यरूप राजुप्रतरको स्थापित कर ऊपरसे उनंचास खण्ड करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र क्षेत्र होता है। यद्यदि एक लाख योजन बाहल्यके विना संख्यात योजन बाहल्यरूप तिर्यक्प्रतर प्राप्त होता है, तथापि तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग ही होता है। वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त तिर्यंच जीवोंकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। किन्तु अतीत कालकी अपेक्षा तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और दो लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, विक्रिया करनेमें समर्थ पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण वायु-

रज्जुबाहल्लरज्जुपदरमेत्तफोसणुवलंभादो ।

पंचिंदियतिरिक्ख--पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त -- पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणि-पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता सत्थाणेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १४ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १५ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा– एदेसिं वट्टमाणं खेत्तं । आदिल्लेहि तिहि वि तिरिक्खेहि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरिक्खलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एदम्हि खेत्ते आणिज्जमाणे भोगभूमिपडिभागदीवाणमंतरेसु ट्ठिदअसंखेज्जेसु समुद्देसु सत्थाणपदट्ठिद[1] तिरिक्खा णत्थि त्ति एदं खेत्तमाणिय रज्जुपदरम्मि अवणिय सेसं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं पंचिंदियतिरिक्खतिगस्स सत्थाणखेत्तं होदि । विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियचउक्केण परिणदतिविहपंचिंदियतिरिक्खेहि तिण्हं लोगाणम-

---

कायिक जीवोंका पांच राजु बाहल्यरूप राजुप्रतरप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवों द्वारा स्वस्थानसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ १४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त चार प्रकारसे तिर्यंचों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ १५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है – इनकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । अतीत कालकी अपेक्षा प्रथम तीन प्रकारके तिर्यंचों द्वारा स्वस्थान पदसे तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । इस क्षेत्रके निकालते समय भोगभूमिप्रतिभागरूप द्वीपोंके अन्तरालमें स्थित असंख्यात समुद्रोंमें स्वस्थान पदमें स्थित तिर्यंच नहीं हैं, अतः इस क्षेत्रको लाकर व राजुप्रतरमेंसे कम कर शेषको संख्यात सूच्यंगुलोंसे गुणित करनेपर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र उक्त तीन पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका स्वस्थानक्षेत्र होता है । विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात, इन चार पदोंसे परिणत तीन प्रकारके पंचेन्द्रिय तिर्यंचो द्वारा तीन लोकोंका

---

१. अ. आ. प्रत्यो वट्ठिदुव इति पाठः ।

संखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणोफोसिदो। कुदो ? मित्तामित्तदेवाणं वसेण एदेसिं सव्वदीव-समुद्देसु संचरणं पडि विरोहाभावादो। तेणेत्थ संखेज्जंगुलबाहल्लतिरियपदरमुड्ढमेगुणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे पंचिंदियतिरिक्खतिगस्स विहारादिचउक्कखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। एसो वासद्देण सूइदट्ठो। विहारवदिसत्थाणखेत्तपरूवणाए चेव वेयण-कसाय-वेउव्वियपदाणं पि परूवणा कदा गंथलाघवकरणट्ठं।

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १६ ॥

सुगममेदं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा ॥ १७ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो। वेयण-कसाय-वेउव्वियपदाणं पि तीदकालपरूवणा पुव्वमेव परूविदा। मारणंतिय-उववादपरिणयपंचिंदियतिरिक्खतिएहि

....

असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, मित्र व शत्रुरूप देवोंके वशसे इनके सर्व द्वीपसमुद्रोंमें संचार करनेका कोई विरोध नहीं है। इसीलिये यहां संख्यात अंगुल बाहल्यरूप तिर्यक् प्रतरके ऊपरसे उनंचास खण्ड कर प्रतराकारसे स्थापित करनेपर उक्त तीन पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका विहारादि चार पदसम्बन्धी क्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र होता है। यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है। ग्रन्थलाघवके लिये विहारवत्स्वस्थान क्षेत्रकी प्ररूपणासे वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात पदोंकी भी प्ररूपणा कर दी गई है।

उक्त तीन प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके द्वारा समुद्घात व उपपाद पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ १६ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उपर्युक्त तिर्यंचोंके द्वारा उक्त पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग अथवा सर्व लोक स्पृष्ट है ॥ १७ ॥

इस सूत्रकी वर्तमानप्ररूपणा क्षेत्रके समान है। वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात व वैक्रियिकसमुद्घात पदोंकी अतीतकालप्ररूपणा भी पूर्वमें ही की जा चुकी है। मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे परिणत उक्त तीन पंचेन्द्रिय तिर्यंचों द्वारा

तीदकाले सव्वलोगो फोसिदो। लोगणालीए बाहिं तसकाइयाणं सव्वकालसंभवाभावादो सव्वलोगो त्ति वयणं ण जुज्जदे। ण एस दोसो, मारणंतिय-उववादपरिणयतसजीवे मोत्तूण सेसतसाणं बाहिमत्थित्तपडिसेहादो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो। संपहि तीदकालपरूवणं कस्सामो। तं जहा— सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसायपदपरिणएहि पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कुदो ? कम्मभूमिपडिभागे सयंपहपव्वय[1]परभागे अड्ढाइज्जदीव-समुद्देसु च अदीदकाले तत्थ सव्वत्थ संभवादो। तेण तेहि फोसिदखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो। तस्साणयणविहाणं वुच्चदे— सयंपहपव्वदब्भंतरखेत्तं जगपदरस्स संखेज्जदिभागो। तं रज्जुपदरम्मि अवणिदे सेसं जगपदरस्स संखेज्जदिभागो। तं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि। अपज्जत्ताणमंगुलस्सासंखेज्जदिभागोगाहणाणं कधं संखेज्ज-

---

अतीत कालमें सर्व लोक स्पृष्ट है।

शंका — लोकनालीके बाहिर सर्वदा कालमें त्रसकायिक जीवोंकी सर्वदा सम्भावना न होनेसे 'सर्व लोक स्पृष्ट है' यह कहना योग्य नहीं है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे परिणत त्रस जीवोंको छोड़कर शेष त्रस जीवोंके अस्तित्वका लोकनालीके बाहिर प्रतिषेध है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवोंकी वर्तमानप्ररूपणा क्षेत्रके समान हैं। इस समय अतीत कालकी अपेक्षा प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है — स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घात पदोंसे परिणत पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तों द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि कर्मभूमिप्रतिभागरूप स्वयंप्रभ पर्वतके परभागमें और अढ़ाई द्वीप-समुद्रोंमें अतीत कालकी अपेक्षा वहां उनकी सर्वत्र सम्भावना है। इसीलिये उनके द्वारा स्पृष्ट क्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवे भाग प्रमाण होता है। उसके निकालनेके विधानको कहते हैं — स्वयंप्रभ पर्वतका अभ्यन्तर क्षेत्र जगप्रतरके संख्यातवें भागप्रमाण है। उसे राजुप्रतरमेंसे कम करनेपर शेष जगप्रतरके संख्यातवें भागप्रमाण रहता है। उसे संख्यात सूच्यंगुलोंसे गुणित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है।

शंका — अंगुलके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनावाले अपर्याप्त जीवोंका

---

1. अ. आ. प्रत्योः 'पव्वद' इति पाठः।

गुलुस्सेहो लब्भदे ? ण, मुदपंचिंदियादितसकाइयाणं कलेवरेसु अंगुलस्स संखेज्जदिभाग-मादिं काऊण जाव संखेज्जजोयणा त्ति[1] कमवड्ढीए ट्ठिदेसु उप्पज्जमाणाणमपज्जत्ताणं संखेज्जंगुलुस्सेहुवलंभादो। अधवा सव्वेसु दीव-समुद्देसु पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता होंति। कुदो ? पुव्ववइरियदेवसंबंधेण कम्मभूमिपडिभागुप्पण्णपंचिंदियतिरिक्खाणं एगबंधणबद्धछज्जीवणिकाओगाढओरालियदेहाणं सव्वदीव-समुद्देसु अवट्ठाणदंसणादो। मारणंतिय-उववादेहि पुण सव्वलोगो फोसिदो। कुदो ? मारणंतिय-उववादाणं सव्वलोगे पडिसेहाभावादो।

मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणीओ सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १८ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १९ ॥

संख्यात अंगुलप्रमाण उत्सेध कैसे पाया जाता है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, अंगुलके संख्यातवें भागको आदि लेकर संख्यात योजन तक क्रमवृद्धिसे स्थित मृत पंचेन्द्रियादि त्रसकायिक जीवोंके शरीरोंमें उत्पन्न होनेवाले अपर्याप्तोंका संख्यात अंगुलप्रमाण उत्सेध पाया जाता है। अथवा, सभी द्वीपसमुद्रोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव होते है, क्योंकि, पूर्वके वैरी देवोंके सम्बन्धसे एक बन्धनमें बद्ध जीवनिकायोंसे व्याप्त औदारिक शरीरको धारण करनेवाले कर्म भूमि प्रतिभागमें उत्पन्न हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका सब समुद्रोंमें अवस्थान देखा जाता है। मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंकी अपेक्षा सर्व लोक स्पृष्ट है, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे परिणत उक्त जीवोंका सब लोकमें प्रतिषेध नही है।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यनियों द्वारा स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त तीन प्रकारके मनुष्यों द्वारा स्वस्थानसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ १९ ॥

---

१ मु. प्रतौ जोयणाति इति पाठः।

एदस्सत्थो वुच्चदे – सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो, तीदे काले पुव्ववइरियदेवसंबंधेण वि माणुसुत्तरसेलादो परदो मणुसाणं गमणाभावादो। माणुसखेत्तस्स पुण संखेज्जदिभागो फोसिदो, उवरि-गमणाभावादो। अधवा विहारेण माणुसलोगो देसूणो फोसिदो त्ति केइं भणंति, पुव्ववइरियदेवसंबंधेण उड्ढं देसूणजोयणलक्खुप्पायणसंभवादो।

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २० ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जा वा भागा सव्वलोगो वा ॥ २१ ॥

वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं विहारवदिसत्थाणभंगो। तेजाहारपदाणं सत्थाण-सत्थाणभंगो। मारणंतिएण सव्वलोगो फोसिदो, तीदे काले सव्वम्हि लोगखेत्ते माणुसाणं

....

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं – स्वस्थानस्वस्थान व विहारवत्स्वस्थानसे चार लोकोंका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है, क्योंकि, अतीत कालमें पूर्वके वैरी देवोंके सम्बन्धसे भी मानुषोत्तर पर्वतके आगे मनुष्योंका गमन नहीं है। परन्तु मानुषक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पृष्ट है, क्योंकि, मानुषक्षेत्रके ऊपर उक्त मनुष्योंका गमन नहीं है। अथवा, विहारकी अपेक्षा कुछ कम मानुषलोक स्पृष्ट है, ऐसा कोई आचार्य कहते हैं, क्योंकि पूर्ववैरी देवोंके सम्बन्धसे ऊपर कुछ कम एक लाख योजनके उत्पादनकी सम्भावना है।

उपर्युक्त मनुष्योंके द्वारा समुद्घातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है।

उपर्युक्त मनुष्योंके द्वारा समुद्घातकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात बहुभाग, अथवा सर्व लोक स्पृष्ट है ॥ २१ ॥

वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंकी अपेक्षा स्पर्शनका निरूपण विहारवत्स्वस्थानके समान है। तैजससमुद्घात और आहारक-समुद्घात पदोंकी अपेक्षा स्पर्शनप्ररूपणा स्वस्थानस्वस्थान पदके समान है। मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा उक्त मनुष्योंके द्वारा सर्व लोक स्पृष्ट है, क्योंकि, अतीत कालकी अपेक्षा सब लोकक्षेत्रमें मारणान्तिकसमुद्घातसे मनुष्योंका गमन पाया

मारणंतिएण गमणुवलंभादो। दंड-कवाड-पद-लोगपूरण[1]परूवणा सुगमेत्ति परूविज्जदे

उववादेहि केवडियं खेत्तं ? फोसिदं ॥ २२ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा ॥ २३ ॥

लोगस्सासंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणकालावेक्खो। एदेण जाणिज्जदे वट्टमाणातीदकालसंबंधिखेत्ताणि दो वि फोसणे परूविज्जंति त्ति। अदीदे घणसव्वलोगो फोसिदो, सुहुमेहि सव्वलोगावट्ठिएहि आगंतूण मणुस्सेसु उप्पज्जमाणेहि आवूरिज्जमाणलोगदंसणादो। कधं पंचेचालीसजोयणलक्खबाहल्लतिरियपदरमेत्तागासपदेसट्ठिदमणुस्सेहि सव्वलोगो आवूरिज्जदि ? ण, मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विविवागजोग्गागासपदेसेहि सव्वलोगपेरंतेसु मज्झे च समयाविरोहेण अवट्ठिएहि णिग्गंतूण संखेज्जासंखेज्जजोयणायामेण मणुसगइमुवगएहि सव्वादीदकालम्मि सव्वलोगावूरणं पडि विरोहाभावो।

जाता है। दण्ड, कपाट, प्रतर व लोकपूरण समुद्घातपदोंकी प्ररूपणा सुगम है इसलिये उनकी प्ररूपणा यहां नहीं की जाती।

उपर्युक्त मनुष्योंके द्वारा उपपादपदकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उपपाद पदकी अपेक्षा उक्त मनुष्यों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग अथवा सर्व लोक स्पृष्ट है ॥ २३ ॥

'लोकका असंख्यातवां भाग' यह निर्देश वर्तमान कालकी अपेक्षा है। इससे जाना जाता है कि वर्तमान व अतीत कालसम्बन्धी क्षेत्र दोनों ही स्पर्शनमें प्ररूपित हैं। अतीत कालकी अपेक्षा सर्व घनलोक स्पृष्ट है, क्योंकि, मनुष्योंमें आकर उत्पन्न होनेवाले सर्व लोकमें स्थित सूक्ष्म जीवोंसे परिपूर्ण लोक देखा जाता है।

शंका – पैंतालीस लाख योजन बाहल्यवाले तिर्यक्प्रतरमात्र आकाशप्रदेशोंमें स्थित मनुष्योंके द्वारा सर्व लोक कैसे पूर्ण किया जाता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि लोकके पर्यन्तभागोंमें व मध्यमें भी समयाविरोधसे स्थित ऐसे मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके विपाकयोग्य आकाशप्रदेशोंसे निकलकर संख्यात एवं असंख्यात योजन आयामरूपसे मनुष्यगतिको प्राप्त हुए मनुष्यों द्वारा सर्व अतीत कालमें सर्व लोकके पूर्ण करनेमें कोई विरोध नहीं है।

---

१. मु. प्रतौ कवाड लोगपूरण इति पाठः। २. अ. आ. प्रतौ मुहुमत्ति मु. प्रतौ (म) इति पाठः।

मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो[1] ॥ २४ ॥

वट्टमाणं खेत्तं। सत्थाणसत्थाण-वेदण कसायसमुग्घादेहि चदुण्हं लोगाणमसंखे-ज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो तीदे काले फोसिदो। मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो। तेण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो ण होदि त्ति ? ण, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे दोसाभावादो।

देवगदीए देवा सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २५ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा ॥ २६ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे – वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो। सत्थाणेण देवेहि तिण्हं

मनुष्य अपर्याप्तोंके स्पर्शनका निरूपण पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ॥ २४ ॥

मनुष्य अपर्याप्तोंके वर्तमानकालिक स्पर्शनका निरूपण क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्‌घात पदोंकी अपेक्षा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग व मानुषक्षेत्रका संख्यातवां भाग अतीत कालमें स्पृष्ट है। मारणान्तिकसमुद्‌घात व उपपादपदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है।

शंका– इसी कारण मनुष्य अपर्याप्तोंके स्पर्शनको पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान कहना ठीक नहीं है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर वैसा कहनेमें कोई दोष नहीं है।

देवगतिमें देव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ २५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

देव स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श करते हैं ॥ २६ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं – वर्तमानकालिक स्पर्शनकी प्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। देवों द्वारा स्वस्थानकी अपेक्षा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग,

---

१ अ. ब. इ. प्रतिषु अपज्जत्ता भंगो इति पाठः।

लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं ? ण एस दोसो, चंदाइच्च-बुह-बेसइ-कोण-सुक्कंगार-णक्खत्त-तारागण-अट्ठविहवेंतरविमाणेहि य रुद्धखेत्ताणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणमुवलंभादो। विहारेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। मेरु-मूलादो उवरि छरज्जुमेत्तो हेट्ठा दोरज्जुमेत्तो देवाणं विहारो, तेण अट्ठचोद्दसभागो त्ति वुत्तो। केण ते ऊणा ? तदियपुढवीए हेट्ठिमजोयणसहस्सेण।

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २७ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अट्ठ-णवचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २८ ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणक्खेत्तपरूवओ, तेण

तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है।

शंका— तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग कैसे घटित होता है।

समाधान— यह कोई दोष नहीं है. क्योंकि, चन्द्र, आदित्य, बुध, बृहस्पति, शनि, शुक्र-अंगारक (मंगल), नक्षत्र, तारागण और आठ प्रकारके व्यन्तर विमानोंसे रुद्ध क्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण पाये जाते हैं। विहारकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं। मेरुमूलसे ऊपर छह राजुमात्र और नीचे दो राजुमात्र क्षेत्रमें देवोंका विहार है, इसलिये 'आठ बटे चौदह भाग' ऐसा कहा है।

शंका— वे आठ बटे चौदह भाग किससे कम हैं ?

समाधान— तृतीय पृथिवीके नीचे एक सहस्र योजनसे कम हैं।

देवों द्वारा समुद्घातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

समुद्घातकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम आठ बटे चौदह या नौ बटे चौदह भाग स्पृष्ट है ॥ २८ ॥

'लोकका असंख्यातवां भाग' यह निर्देश वर्तमानक्षेत्रका प्ररूपक है,

---

१. बृ. प्रतौ पव्वणाओ इति पाठः।

एत्थ खेत्ताणिओगद्दारपरूवणा एत्थ जा जोग्गा सा सव्वा परूवेदव्वा । संपहि तीद-कालखेत्तपरूवणा कीरदे– वेयण-कसाय-वेउव्विएहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा । कुदो? विहरमाणाणं देवाणं सगविहारखेत्तस्संतरे वेयण-कसाय-विउव्वणाणमुवलंभादो । मारणंतिएण णवचोद्दसभागा फोसिदा, मेरुमूलादो उवरि सत्त हेट्ठा दोरज्जुमेत्तखेत्त-ब्भंतरे तीदे काले सव्वत्थ कयमारणंतियदेवाणमुवलंभादो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं ? फोसिदं ॥ २९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो छच्चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ३० ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति वट्टमाणखेत्तं पडुच्च णिद्देसो कदो । तेणेत्थ खेत्तपरूवणा सव्वा कायव्वा । तीदकालखेत्तपरूवणं कस्सामो– छचोद्दसभागा देसूणा । कुदो ? आरणच्चुदकप्पो त्ति तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीणं संजदासंजदाणं च उववादुवलंभादो ।

इसलिये यहां जो क्षेत्रानुयोगद्वारप्ररूपणा योग्य हो उस सबको प्ररूपणा करनो चाहिये । अब अतीत कालसम्बन्धी क्षेत्रप्ररूपणा की जाती है– वेदनासमुद्घात कषायसमुद्घात और वैक्रियिक-समुद्घात पदोंकी अपेक्षा आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, विहार करनेवाले देवोंके अपने विहारक्षेत्रके भीतर वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पद पाये जाते हैं । मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा नौ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, मेरुमूलसे ऊपर सात और नीचे दो राजुमात्र क्षेत्रके भीतर सर्वत्र अतीत कालमें मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त देव पाये जाते हैं ।

उपपादकी अपेक्षा देवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपपादकी अपेक्षा देवों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ ३० ॥

'लोकका असंख्यातवां भाग' यह निर्देश वर्तमान क्षेत्रकी अपेक्षासे किया गया है । इस कारण यहां सब क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये । अतीत कालकी अपेक्षा क्षेत्रकी प्ररूपणा करते हैं– उपपादकी अपेक्षा अतीत कालमें कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं; क्योंकि, आरण-अच्युत कल्प तक तिर्यंच व मनुष्य असंयत सम्यग्दृष्टियों और संयतासंयतोंका उपपाद पाया जाता है ।

---

१. मु. प्रती 'एत्थ जा' इतिपाठो नास्ति केवलं 'जा' इति पाठो ऽस्ति ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवा सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अद्धुट्टा वा अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा ॥ ३२ ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणं पडुच्च वुत्तो । तेण एत्थ खेत्तपरूवणा कायव्वा । तीदकालं पडुच्च परूवणं कस्सामो - सत्थाणेण वाणवेंतर-जोदिसियदेवेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो? वट्टमाणकाले वि[1] तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमोट्ठहिय अवट्ठाणादो । भवणवासियदेवेहि सत्थाणेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहारवदिसत्थाणेण अद्धुट्ठचोद्दसभागा । कुदो ? भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवाणं मेरुमूलादो अधो दोण्णि, उवरि जाव सोहम्मविमाणसिहरधयदंडो त्ति दिवड्ढरज्जुमेत्तसगणिमित्तविहारस्सुवलंभादो । परपच्चएण पुण

भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

पूर्वोक्त देव स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग, साढे तीन राजु अथवा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श करते हैं ॥ ३२ ॥

'लोकका असंख्यातवां भाग' यह निर्देश वर्तमान कालकी अपेक्षा कहा गया है । इस कारण यहां क्षेत्रप्ररूपणा करनी चाहिये । अतीत कालकी अपेक्षा प्ररूपणा करते हैं– स्वस्थान–पदसे वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवों द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट किया है, क्योंकि, वर्तमान कालमें तिर्यग्लोकके संख्यातवे भागको व्याप्तकर उनका अवस्थान है । भवनवासी देवों द्वारा स्वस्थानकी अपेक्षा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढाई द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा चौदह भागोंमेंसे साढे तीन भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंका स्वनिमित्तक विहार मेरुमूलसे नीचे दो राजु और ऊपर सौधर्म विमानके शिखरपर स्थित ध्वजादण्ड तक डेढ़ राजुमात्र पाया जाता है । परन्तु परनिमित्तक विहारकी अपेक्षा उक्त देवों द्वारा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, उपरिम

---

१. मु. 'वदो व' इति पाठः ।

अट्ठचोद्दस भागा देसूणा । कुदो ? उवरिमदेवेहि णिज्जमाणा णं अद्धपंचमरज्जूओ सगपच्चएण उद्धट्ठरज्जो गच्छंति त्ति देवाणमट्ठचोद्दसभागफोसणं होदि ।

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अब्भुट्ठा वा अट्ठ-णचोद्दस भागा वा देसूणा ॥ ३४ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे– लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति वयणं वट्टमाणखेत्तपरूवणट्ठं भणिदं । तेण एत्थ खेत्तपरूवणा सव्वा कायव्वा । संपधि उवरिल्लेहि सत्तावयवेहि अदीदकालखेत्तपरूवणा कीरदे– वेयण-कसाय-वेउव्विएहि आहुट्ठचोद्दसभागा अट्ठचोद्दसभागा वा फोसिदा । कुदो ? सग-परपच्चएहि हिंडंताणं भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवाणं वेयण-कसाय वेउव्विएहि सह परिणयाणमेत्तियमेत्ते[1] खेत्तुवलंभादो । मारणंतिएण णवचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? मेरुमूलादो हेट्ठा[2]

देवोंसे ले जाये गये वे देव साढ़े चार राजु और स्वनिमित्तसे साढ़े तीन राजुप्रमाण गमन करते हैं; इसलिये देवोंका स्पर्शन आठ बटे चौदह भागप्रमाण होता है ।

समुद्घातकी अपेक्षा उपर्युक्त देवों द्वारा कितना स्पृष्ट है ? ॥ ३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

समुद्घातकी अपेक्षा उपर्युक्त देवों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग, अथवा चौदह भागोंमें कुछ कम साढ़े तीन भाग अथवा आठ व नौ भाग स्पृष्ट हैं ? ॥ ३४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं – 'लोकका असंख्यातवां भाग' यह वचन वर्तमानक्षेत्रके प्ररूपणार्थ कहा गया है । इस कारण यहां सब क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये । इस समय सूत्रके उपरिम अवयवोंसे अतीतकालसम्बन्धी क्षेत्रकी प्ररूपणा की जाती है – वेदनासमुद्घात, और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंकी अपेक्षा चौदह भागोंमें साढ़े तीन अथवा आठ भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, स्वनिमित्तसे या परनिमित्तसे विहार करनेवाले भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंका वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात एवं वैक्रियिकसमुद्घात पदोंके साथ परिणत होनेपर इतनेप्रमाण क्षेत्र पाया जाता है । मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा कुछ कम नौ बटे चौदह भाग स्पृष्ट है, क्योंकि, मेरु-

---

१. मु. प्रती वृत्त इति पाठः । २. मु. प्रती हेट्ठदो इति पाठः ।